स्वतंत्रता आंदोलन एवं महिला सशक्तिकरण में बंगाल की महिलाओं का योगदान

डॉ. रानी कुमारी [1*]

[1] सहायक प्राध्यापक इतिहास, स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर (म.प्र.) पिन - 487001

प्राप्त: 20 सितम्बर 2025
स्वीकार:30 सितम्बर 2025
विधा: इतिहास

संप्रेषक लेखक
डॉ. रानी कुमारी
pritambhadanisanyal@gmail.com

शोधपत्र का उद्धरण
कुमारी, रानी, (2025). स्वतंत्रता आंदोलन एवं महिला सशक्तिकरण में बंगाल की महिलाओं का योगदान, JESS, 1(1), 50-58.

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल की महिलाओं का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रेरणादायी रहा है। सामाजिक रूढ़ियों और पितृसत्तात्मक प्रतिबंधों को तोड़ते हुए इन महिलाओं ने न केवल राजनीतिक आंदोलन में भाग लिया बल्कि बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई। लीला रॉय ने महिला शिक्षा, मताधिकार, आत्मरक्षा प्रशिक्षण और क्रांतिकारी संगठनों में सक्रिय भूमिका निभाई। कल्पना दत्ता, प्रीतिलता वादेदार और नानीबाला देवी जैसी क्रांतिकारी महिलाओं ने सशस्त्र संघर्ष में प्रत्यक्ष भागीदारी की तथा ब्रिटिश सत्ता को चुनौती दी। वहीं बेगम रोकेया ने महिला शिक्षा, नारीवाद और मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के लिए आजीवन संघर्ष किया। बसंती देवी, सरला देवी चौधरानी, कमला दास गुप्ता और लबन्या प्रभा घोष ने समाज सुधार, असहयोग, सविनय अवज्ञा तथा भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय योगदान दिया। सुनीति चौधरी, सुहासिनी गांगुली और वीना मजूमदार ने महिलाओं के संगठन, शिक्षा, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आंदोलनों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन सभी महिलाओं ने अपने त्याग, साहस और नेतृत्व से सिद्ध किया कि भारत की स्वतंत्रता केवल पुरुषों का संघर्ष नहीं था, बल्कि महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका यह योगदान आज भी प्रेरणा का स्रोत है।

शब्द कुंजी: महिला सशक्तिकरण, बंगाल की स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी आंदोलन, नारी शिक्षा एवं अधिकार, सामाजिक सुधार

जब भी हम भारत के स्वतंत्रता के इतिहास के बारे में याद करते हैं तो हमारे मस्तिष्क में पहली तस्वीर पुरूष स्वतंत्रता सेनानियों का आता है क्योंकि हमारे समाज का परंपरागत ढांचा ही ऐसा है कि हम महिलाओं के बारे में ऐसा सोचते ही नहीं है। हम कभी अपने राष्ट्र के निर्माण में उन महिलाओं का स्मरण ही नहीं करते, जिन्होंने अपने समय में तत्कालीन वर्जनाओं को तोड़ते हुए वो कर दिखाया जो उस समय की परिस्थिति के लिए काफी बड़ी बात थी। चाहे वह कोई भी सामाजिक-धार्मिक कुरीतियों को तोड़ने

की बात हो या स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान को लेकर रहा हो। भारत की आजादी के लिए सिर्फ पुरूष ही नहीं बल्कि महिलाओं ने भी कंधे से कंधा मिलाकर काम किया तब जाकर यह स्वर्णिम स्वतंत्रता हमें मिल पाई। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल की महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान रहा है, चाहे वो बौद्धिक क्षेत्र में कलम के सिपाही के रूप में रहा होया आंदोलनकारी के रूप में। यही कारण है कि भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास में बंगाल का अपना विशेष महत्व है। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में विभिन्न क्षेत्रों के अनगिनत महिलाओं का अविस्मरणीय योगदान रहा है, इन महिलाओं में भी बंगाल की महिलाओं ने बौद्धिक एवं सांस्कृतिक योगदान को भूलाया नहीं जा सकता।

लीला रॉय बंगाल की एक लोकप्रिय क्रांतिकारी नेता एवं सामाजिक राजनीतिक कार्यकर्ता थी। महिलाओं की सशक्तिकरण के लिए लीला रॉय ने उल्लेखनीय काम किया, आज हम जिस नारीवाद और सशक्ति करण की बात करते हैं, अगर विचारें तो उसकी नींव डालने में इनका योगदान भी कम नहीं है। इनका जन्म 2 अक्टूबर, 1900 को असम के गोलपारा में एक हिंदू परिवार में हुआ था, पिता गिरीश चंद्र नाग, डिप्टी मेजिस्ट्रेट थे जबकि माता का नाम कुंजलता नाग था। असम में जन्म लेने वाली लीला रॉय का पालन-पोषण सिलहट में हुआ था जो कि आज बांग्लादेश में है।

लीला रॉय ने ढाका के ईडन हाई स्कूल से अपनी स्कूली शिक्षा एवं कलकत्ता के बेथ्यून कॉलेज से अंग्रेजी विषय से स्नातक किया था, यह वह समय था जब लड़कियों के लिए शिक्षा प्राप्त करना बहुत असाध्य कार्य था लेकिन इन्होंने न केवल परंपरागत ढांचे को तोड़ते हुए कॉलेज में दाखिला लिया बल्कि बेहतरीन प्रदर्शन कर पद्मावती स्वर्ण पदक भी हासिल किया। ढाका विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। आज जिस तरह सह शिक्षा का प्रचलन है उस समय महिलाओं को पुरूषों के साथ पढ़ने की अनुमति नहीं थी इसलिए महिलाएं उच्च शिक्षा से वंचित रहती थी पर लीला रॉय की दृढ़ इच्छा शक्ति ने ढाका विश्वविद्यालय के उप कुलपति को फिलिप हर्टोग को उन्हें लड़कों के साथ पढ़ने की विशेष अनुमति देने के लिए मजबूर कर दिया। लीला रॉय इस विश्वविद्यालय में बंगाली और संस्कृत में एमए की डिग्री पाने वाली पहली छात्रा थी।

लीला रॉय ने महिलाओं के सर्वतोमुखी उन्नति के लिए जीवन भर कार्य किया, इसीलिए अरमानिटोला गर्ल्स स्कूल, दीपाली हाई स्कूल जैसे शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। महिलाओं के सामजिक और आर्थिक अधिकारों के बारें में सुझाव के लिए बैठकों की व्यवस्था की और इसी के लिए इन्होंने 1921 ई. में अखिल बंगाल महिला मताधिकार संघ की स्थापना की, इस संस्था की सहायक सचिव के रूप में महिलाओं के लिए कार्य किया। महिलाओं के लड़ाकू प्रशिक्षण हेतु 1923 ई. में दीपाली संघ की स्थापना की, इसी संघ से प्रीतिलता वाडेदर ने भी प्रशिक्षण प्राप्त किया था। पितृसत्तात्मक परंपराओं और पुरूषों की राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों में भूमिकाओं के स्थापित मानदंडों को चुनौती देने में लीला रॉय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई साथ ही अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध भी जोरदार आवाज उठाई। महिलाओं के आर्थिक सशक्ति करण हेतु इन्होंने काफी आवाज बुलंद की। जयश्री नामक पत्रिका वर्ष 1931 में महिलाओं द्वारा लिखा गया, संपादित और प्रबंधित पहली पत्रिका थी, इस पत्रिका को शुरू करने का मुख्य उद्देश्य प्रेस की आजादी को बरकरार रखने के साथ ही बंगाल की महिलाओं में देशभक्ति की भावना

और देश सेवा हेतु निर्भय भावना को प्रोत्साहित करना था।

लीला रॉय 1925 ई. में श्री संघ नाम क्रांतिकारी समूह में भी शामिल हुई जो हेमचंद्र घोष और अनिल रॉय के नेतृत्व में संचालित था, लीला रॉय इस समूह में प्रवेश करने वाली पहली महिला सदस्य थी, इनकी सक्रिय सहभागिता ने अन्य महिलाओं को भी इस समूह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। इस संस्था में महिलाओं को बम बनाने, हथियार का इस्तेमाल करने, पर्चे बांटने का काम सिखाया जाता था। युगांतर और अनुशीलन समिति जैसे पुरूषों के वर्चस्व वाले क्रांतिकारी समुहों के साथ जुड़कर लीला रॉय ने महिलाओं को प्रभावशाली तरीके से स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। लीला रॉय सुभाष चंद्र बोस की समर्थक थी एवं उनकी करीबी सहयोगी रही, 1921 में नेताजी को बंगाल की बाढ़ के बाद राहत कार्य का नेतृत्व करते हुए देख इन्होंने छात्र जीवन में ही ढाका महिला समिति के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यही नहीं सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी इन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और इसी कारण 6 साल वो जेल में भी काटी । वर्ष 1938 में कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष सुभाष चंद्र बोस ने कांग्रेस की राष्ट्रीय योजना समिति के इन्हें मनोनीत किया था, साल 1939 में लीला रॉय ने अनिल रॉय से शादी की। 1927-28 में महिला आत्म रक्षा कोष नामक एक कोष की स्थापना की जो महिलाओं की आत्म रक्षा हेतु स्थापित पहला मार्शल आर्ट समूह था। महिला शिक्षा हेतु उन्होंने 'गण शिक्षा परिषद' नामक संगठन की स्थापना की थी।

कल्पना दत्ता भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख कार्यकर्ता थी, इनका जन्म 1913 में श्रीपुर में हुआ था। इन्होंने अपनी 10वीं की पढ़ाई 1929 में पूरी की एवं आगे की पढ़ाई के लिए कोलकाता के बेथ्यून कॉलेज में एडमिशन लिया, यहीं से छात्र संघ में भी वह शामिल हो गई जो बाद में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का हिस्सा बन गया। था। बंगाल में जब भीषण अकाल पड़ा था तो उन्होंने चटगांव के गांवों में भूखों के लिए भोजन और बीमारों के लिए चिकित्सा की व्यवस्था की। बंगाल विभाजन के दौरान हुए सांप्रदायिक दंगे के दौरान कल्पना ने राहत एवं बचाव के कार्यों में सक्रियता से भाग लिया। कल्पना दत्ता बंगाली क्रांतिकारी सूर्यसेन के नेतृत्व में संचालित सशस्त्र संगठन की प्रारंभिक सदस्यों में से थी। सेन ने उन्हें और प्रीतिलता वाडेदार को चटगांव में यूरोपीय क्लब पर हमला करने का काम सौंपा, जिस हमले से एक हफ्ते पहले ही उस जगह का सर्वेक्षण करते हुए अंग्रेज सरकार द्वारा इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया चटगांव शस्त्रागार कांड में उनपर भी मुकदमा चलाया गया था जिसमें इन्हें आजीवन करावास की सजा दी गई थी कल्पना दत्ता खुदीराम बोस एवं कनाईलाल दत्ता के काफी प्रभावित थी, छह साल के करावास के दौरान वह साम्यवाद से अवगत हुई, इसी समय उन्होंने मार्क्स एवं लेनिन को भी पढ़ा था। जिससे राजनीतिक स्थितियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कर पाई।

इधर क्रांतिकारियों की रिहाई के चलाए गए देशव्यापी अभियान के बाद 1939 में उन्हें मुक्त किया गया कल्पना दत्ता ने 1943 में पी.सी जोशी के साथ शादी कर ली जो कि कम्युनिस्ट पाटी के महासचिव एवं लोकप्रिय नेता थे। दोनों ने बंगाल में पार्टी के कार्यों में स्वयं को पूर्णतः समर्पित कर दिया था। 1946 में

उन्होंने बंगाल विधानसभा चुनाव लड़ा था? 1995 में उनकी मृत्यु हो गई। इनके जीवन में कई महिलाओं को साहस और दृढ़ता के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

बेगम रोकेया सखावत हुसैन ये दक्षिण एशिया में महिला मुक्ति आंदोलन की अग्रणी थी । बेगम रोकेया बंगाल की पहली नारीवादी प्रतीकों में से एक थी, वह विचारक, लेखिका, शिक्षिका और राजनीतिक कार्यकर्ता थी। बेगम रोकेया सखावत हुसैन का जन्म 9 दिसम्बर 1880 को वर्तमान बांग्लादेश के पैराबोंध में एक प्रगतिशील और शिक्षित परिवार में हुआ था। उच्चवर्गीय बंगाली परिवार में रहते हुए उन्होंने लैंगिक असमानता और धार्मिक रूढ़िवाद से जूझती रही। उसके पिता इन्हें कॉलेज जाने एवं अपनी शिक्षा जारी रखने की अनुमति देने को तैयार नहीं थे। पर इन्होंने अपनी शिक्षा जारी रखी एवं बांग्ला और अंग्रेजी की सुप्रसिद्ध लेखिका बन गई।

इन्होंने कई उपन्यास एवं लघु कहानियां लिखीं जो समाज में महिलाओं के संघर्षों के इर्द गिर्द ही घूमते थे एवं नारीवादी विचारों पर आधारित थे। फिर चाहे वह मोचीचूरः सुल्ताना का सपना हो या पर्दा प्रथा (द सेक्लूडेड ओन्स) का पर्दाफाश हो। सामाजिक मानदंडो से लड़ते हुए उन्होंने अपना सर्वस्व जीवन लगा दिया। यही कारण है कि बीबीसी बांग्ला भाषा सेवा द्वारा उन्हें शीर्ष 20 महानतम बंगालियों की सूची में शामिल किया गया। इनका निकाह खान बहादुर सैयद सखावत हुसैन से हुआ था इन्होंने रोकेया को भारतीय पत्रिकाओं में अपने लेखन का अध्ययन करने एवं प्रकाशित करने हेतु प्रोत्साहित किया। लेकिन रोकेया के जीवन साथी का साथ लंबा नहीं रहा उन्हें मधुमेह हो गया था जिससे उनकी मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद में भी वह सामाजिक कार्यों में लगी रही। इन्होंने अपना पूरा जीवन लड़कियों को आत्मनिर्भर एवं शिक्षित बनाने में लगा दिया। एक कार्यकर्ता के रूप में बेगम रोकेया ने भारत में मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों को बढ़ाव देने के लिए एक इस्लामी महिला संघ की स्थापना के लिए काम किया। इस संघ ने महिलाओं की स्थिति को लेकर कई सम्मेलन और बहसें आयोजित की और सुधारों को बढ़ावा दिया। लड़कियों के लिए हाई स्कूल शुरू करने में मदद की। इनकी जन्म तिथि 09 दिसम्बर को बांग्लादेश में बेगम रोकेया दिवस के रूप में मनाया जाता है।

प्रीतिलता वादेदार बेथ्यून कॉलेज में दर्शनशास्त्र की पढ़ाई करने वाली प्रीतिलता वादेदार बंगाल की प्रमुख स्वतंत्रता थीं। महिला-पुरूष की बराबरी की बात करने वाली इस महिला क्रांतिकारी ने जब सूर्यसेन के संगठन का हिस्सा बनी तो प्रारंभ में महिला होने के कारण इनका पूरे मन से स्वागत नहीं किया गया लेकिन शीघ्र ही इन्होंने अपने साहसी एवं समर्पित कार्यों से खुद को साबित कर दिया, इसलिए सूर्यसेन ने 7 युवा क्रांतिकारियों के साथ उन्हें पहाडाली यूरोपीय क्लब में हमला करने एवं गोलीबारी का नेतृत्व करने का दायित्व सौंप दिया। इस क्लब में ‘‘कुत्तों और भारतीयों को अनुमति नहीं है‘‘ यह चिन्ह लगा हुआ था। प्रीतिलता के नेतृत्व में सभी 7 युवा क्रांतिकारी 24 सितम्बर 1932 को रात्रि 10 बजे इस क्लब के पास एकत्र हुए। प्रीतिलता को महिलाओं के लिए प्रकाश की किरण के रूप में जाना जाता था। क्लब में हमले का नेतृत्व करते हुए उन्हें एक गोली लगी जिसमें वो घायल हो गई। भागने में असमर्थ होने पर पकड़े जाने से बचने एवं अन्य क्रांतिकारियों के बचाव के लिए साइनाइड की गोली खा ली। उस समय वह केवल 21 वर्ष की थी । अपने बलिदान से से उन्होंने बंगाल की महिलाओं को संदेश दिया कि अंग्रेजी सत्ता से मुक्ति के लिए वो भी पुरूषों के साथ मिलकर क्ांतिकारी गतिविधियों

को अंजाम दे सकती हैं। चटगांव के लोग आज भी प्रीतिलता वादेदार के बलिदान को नहीं भूले हैं। इस साहसी महिला क्रांतिकारी की गतिविधि को आशुतोष गोवरिकर की फिल्म खेले हम जी जान से में भी दिखाया गया था।

नानीबाला देवी भी बंगाल की प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थीं। इनका जन्म हावड़ा के बैनर्जी परिवार में हुआ था। नानीबाला देवी 15 वर्ष की उम्र में विधवा हो गई थी, वह अपने घर से भाग कर एक ईसाई मिशनरी में शरण ले ली जहां उन्होंने अंग्रेजी भाषा भी सीखी। यहीं पर रहते हुए उनकी मुलाकता अमरेन्द्रनाथ चटर्जी से हुई जो रिश्ते में उनके भतीजे थे। अमरेन्द्र चटर्जी क्रांतिकारी समुह युगांतर के अग्रणी सदस्य थे। अमरेन्द्रनाथ के माध्यम से ही उनका परिचय स्वतंत्रता सेनानियों से भी हुआ। इन स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर नानीबाला हमलों की योजना बनाने में सक्रिय भागीदारी करती थी। जेल में बद स्वतंत्रता सेनानियों के लिए पत्रों की तस्करी करती थी साथ ही इनके लिए आवास भी किराये पर लेती थी, पर अंग्रेजों की आंखों से ज्यादा दिन बच न सकी उन्हें पेशावर में पकड़ लिया गया और कलकत्ता जेल में भेज दिया गया । वह कलकत्ता जेल की पहली महिला कैदी थी। इन्हें एक छोटे से कमरे में कैद कर अलग रखा गया यहां नानीबाला देवी ने 21 दिन का उपवास रखा पर उन्हें फिर रिहा कर दिया गया लेकिन वह स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा बनी रहीं।

बसंती देवी कोलकाता की साहसी एवं मुखर स्वतंत्रता सेनानी थी जिन्होंने जमीनी स्तर पर स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व किया। इनका जन्म 23 मार्च 1880 को कलकत्ता में हुआ था, साप्ताहिक पत्रिका बांग्ला कथा की संपादिका भी थी। इन्होंने अछूतों एवं दलितों के प्रतिरोध आंदोलन में भी सक्रिय भागीदारी करते हुए पूरे देश की यात्रा की तथा जातिगत पूर्वाग्रहों के खिलाफ आवाज उठाकर भारतीय समाज को एकजुट करने का भी प्रयास किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में भी इन्होंने भाग लिया तथा शहर में खादी बेचने के लिए पांच महिलाओं के समूह का भी नेतृत्व किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल हुईं तथा खिलाफत एवं सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी इनकी भागीदारी रही। स्वतंत्रता आंदोलन में इनकी महती भूमिका हेतु इन्हें 1973 ई. में पद्म विभूषण पुरस्कार भी मिला। इनके पति का नाम चितरंजन दास था जिनकी मृत्यु 16 जून 1925 को हो गया था। पति की मृत्यु उपरांत इन्होंने कई सामाजिक आंदोलनों में भी भाग लिया।

सरला देवी चैधरानी एक लेखिका, शिक्षाविद्, गायिका और राजनीतिक कार्यकर्ता थी। इनका जन्म 9 सितम्बर, 1872 को बिहार के भागलपुर जिले में एक प्रगतिशील परिवार में हुआ था, शिक्षा घर पर ही उनके पिता द्वारा हुआ, ये संस्कृत और फारसी के विद्वान थे। महिलाओं के उत्थान एवं बालिका शिक्षा पर इन्होंने काम किया। 1930 में उन्होंने लड़कियों को शिक्षित करने के लिए कोलकाता में शिक्षा सदन नाम से स्कूल की स्थापना की। 1910 ई में भारत स्त्री महामंडल की स्थापना की जो भारत की पहली महिला संगठन थी, यह संगठन महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकारों के लिए बात करती थी। बंगाल में उग्रवादी राष्ट्रवाद को बढ़ावा देकर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारत माता सभा उनके द्वारा स्थापित गुप्त संस्था थी । 1930 में लड़कियों को शिक्षित करने के लिए कोलकाता में शिक्षा सदन नाम से एक स्कूल शुरू किया। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस एवं रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे नेताओं

की करीबी सहयोगी थी। असहयोग, सविनय अवज्ञा एवं भारत छोड़ो आंदोलन में इनकी सक्रिय भागीदारी रही। सरला देवी चौधरानी एक कुशल लेखिका एवं विद्वान थी, महिलाओं के मुद्दों पर इन्होंने विस्तार से लिखते हुए कई किताबें प्रकाशित करवाई। इसमें सीता देवी द क्वीन ऑफ अवध एवं ए नेशन इन मेकिंग है। इनके राष्ट्र सेवा के लिए 1955 में इन्हें पद्म भूषण दिया गया था। इनकी मृत्यु 18 अगस्त 1947 को 73 वर्ष की आयु में हुआ।

कमला दास गुप्ता इनका जन्म ढाका के विक्रमपुर में एक वैद्य परिवार में हुआ था, इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के बेथ्यून कॉलेज से इतिहास में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की। कॉलेज में पढ़ाई के दौरान ही वह राष्ट्रवादी विचारों से अवगत हुई और भारत की आजादी में अपना योगदान देने के लिए स्वतंत्रता आंदोलन की हर गतिविधि में बढ़चढ़ कर भाग लेना शुरू किया । यद्यपि अपनी पढ़ाई के दौरान ही वह महात्मा गांधी के साबरमती आश्रम में प्रवेश करने का प्रयास किया पर उनके माता-पिता ने अनुमति नहीं दी। लेकिन शिक्षा समाप्त करने के उपरांत वे चरमपंथी युगांतर पार्टी के सदस्यों के संपर्क में आई और वह गांधीवाद से सशस्त्र प्रतिरोध का रास्ता अपना ली।

1930 में इन्होंने घर छोड़, गरीब महिलाओं के लिए संचालित एक छात्रावास के प्रबंधक के रूप में नौकरी करना शुरू कर दिया। यहां क्‌रंतिकारियों के लिए बम और बम बनाने की सामग्रीका भंडारण और आपूर्ति का काम करती इन कार्यों के कारण इन्हें कई बार गिरफ्तार भी किया गया पर हर बार सबूतों के अभाव में रिहा कर दिया गया। प्रसिद्ध क्रांतिकारी बीना दास को इनके द्वारा ही रिवॉल्वर दिया गया था जिसका उपयोग उन्होंने फरवरी 1922 में स्टेनली जैक्सन को मारने के लिए किया था। कमला दास को अंततः अग्रेजों ने 1933 में जेल में डालने में सफल रहे पर 1936 में रिहा कर उनके घर में ही नजरबंद कर दिया गया । 1938 में जुगान्तर पाटी ने खुद को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जोड़ लिया तब कमला दास ने भी अपनी निष्ठा को कांग्रेस के प्रति समर्पित कर दिया और अब वो राहत कार्य एवं सामाजिक कार्यों में संलग्न हो गई। 1942-43 ई. में बर्मी शरणार्थियों के साथ एवं 1946-47 में सांप्रदायिक दंगों के शिकार लोगों के लिए कार्य किया। गांधी जी ने जब 1946 के दौरान नोआखली का दौरा किया था तो उनके साथ थी और नोआखली में राहत शिविर के प्रभारी के रूप में काम किया। इन्होंने कांग्रेस महिला शिल्प केंद्र और दक्षिणेश्वर नारी स्वावलंबी सदन में महिलाओं के व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए काम किया। कई वर्ष तक वो महिला पत्रिका मंदिर का संपादन किया। 93 साल की उम्र में उनका निधन हो गया।

लवन्या प्रभा घोष का जन्म पश्चिम बंगाल के पुरूलिया जिले में हुआ था, वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख सेनानी थी। इन्होंने अपना संपूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित कर दिया। इनके पिता ने इन्हें घर पर ही पढ़ाया। 1921 ई. में असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण अंग्रेजी सरकार ने इन्हें जेल में डाल दिया था। सजा पूरी करने के बाद लबन्या घोष पश्चिम बंगाल विधान सभा की प्रमुख सदस्य बन गई इनके पुत्र भी प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे। भारत छोड़ो आंदोलन के दरम्यान इन्हें कई बार गिरफ्तार कर जेल में डाला गया। भाषा आंदोलन की एक सक्रिय सदस्य के रूप में काम किया जो भारत विभाजन और मानभूम में बंगाली भाषी समुदायों पर जबरदस्ती हिंदी थोपने के बाद उभरा था। जिंदगी के

आखिरी दौर को उन्होंने बेहद तंगहाली में गुजारा साथ ही कमजोर दृष्टि, बोलने में समस्या और आर्थिक कठिनाइयों से भी पीड़ित रही। इसी हाल में उनका 11 अप्रैल 2003 में निधन हो गया।

सुनीति चैधरी स्वतंत्रता सेनानी सतीश चंद्र चैधरी की बेटी थी। इनका जन्म 27 दिसम्बर, 1917 को असम के नागांव जिले के बोरझार गांव में हुआ था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल होकर महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू एवं सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं के साथ काम किया । वह आईएनए की सदस्य भी थीं। कैप्टन लक्ष्मी सहगल के सचिव के रूप में भी इन्होंने काम किया था। भारत छोड़ो आंदोलन में भी इन्होंने भाग लिया। स्वतंत्रता गतिविधियों में शामिल होने के कारण इन्हें कई बार जेल में डाला गया था। 1943 ई. में बंगाल अकाल के दौरान राहत एवं पुनर्वास कार्यों में भागीदारी की। ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम किया। 1947 ई. में भारत के आजादी के उपरांत सुनीति चैधरी ने समाज कल्याण का अपना काम जारी रखा। एक स्वतंत्रा सेनानी के रूप में उनका कार्य भारत की युवा पीढ़ी को प्रेरित करती रहेगी। राष्ट्र के प्रति उनके योगदान के लिए उन्हें 2002 में पद्म श्री में सम्मानित किया गया। 94 वर्ष की आयु में 11 अगस्त 2012 में इनकी मृत्यु हुई।

बेला मित्रा बंगाल की प्रमुख समाज सुधारक, लेखिका एवं नारीवादी नेता थी, इनका जन्म 1 दिसम्बर 1892 को कलकत्ता में हुआ था। इनकी शिक्षा बेथ्यून स्कूल में हुई। इन्होंने भारतीय महिला आंदोलन में भागीदारी कर समाज में व्याप्त महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए काफी प्रयास किया। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन की सदस्या भी बनी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भी सक्रिय रूप से भागीदारी की। इन्होंने महिला मताधिकार आंदोलन के लिए काम किया। महिलाओं की भावी पीढ़ियों के लिए सार्वजनिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने और राष्ट्र के विकास में योगदान देने का मार्ग प्रशस्त किया। बेला मित्रा ने लेखिका के रूप में महिलाओं के मुद्दों पर लेख एवं किताबें प्रकाशित की। उनकी सर्वप्रसिद्ध पुस्तक हवा बादल है जो एक नारीवादी और समाज सुधारक के रूप में उनके जीवन और अनुभवों का एक आत्मकथात्मक विवरण है। 1968 ई. में इन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। 24 जुलाई 1972 को 79 वर्ष के आयु में उनका निधन हो गया।

कल्याणी दास प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी बीना दास की बहन थीं, इनका जन्म 1907 में हुआ था। कलकत्ता में महिलाओं के संगठन छत्री संघ की सदस्य थी। 1928-1929 के दौरान वो बंगाल वालंटियर्स कोर में शामिल हुई, साथ ही कल्याणी दास ऑफ बंगाल स्टूडेंटस एसोसिएशन की उपाध्यक्ष भी बनी। 5 सितम्बर 1933 को सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पर अप्रैल 1938 में उन्हें बिना शर्त पैरोल पर रिहा कर दिया गया। लेकिन फिर भी विभिन्न विरोध प्रदर्शनों और हड़तालों से विरोध जारी रखा।

सुहासिनी गांगुली का जन्म 3 फरवरी 1909 को अविनाशचंद्र गांगुली और सरला सुंदरा देवी के यहां हुआ था। सुहासिनी गांगुली के मन में देश के प्रति कुछ करने की ललक किशोरावस्था में विकसित होने लगी थी, क्रांतिकारियों के प्रति उनके मन में सहानुभूति थी। ये बीना दास की सहयोगी थीं और छात्र संघ

से भी जुड़ी थीं। कलकत्ता में एक मूक-बधिर स्कूल में शिक्षिका के रूप में अपनी शुरूआत की थी। 1932-1938 तक उन्हें जेल भी हुई, वहां से रिहा होने के बाद वह कम्युनिस्ट पार्टी में शामिल हो गई। 1942-45 के दौरान हेमंत तरफदार को प्रश्रय देने के कारण उन्हें पुनः गिरफ्तार किया गया। स्वतंत्रता के बाद भी उन्हें जेल की सजा हुई क्योंकि वो साम्यवादी गतिविधियों से जुड़ी थीं। 1965 में सड़क दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गई।

वीना मजूमदार का जन्म कोलकाता में एक बंगाली परिवार में 1927 ई. में हुआ था, पिता इंजीनियर एवं चाचा आरसी मजूमदार एक प्रसिद्ध इतिहासकार थे। इनकी शिक्षा सेंट जॉन डायोसेसन गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल में हुई थी और आगे की पढ़ाई के लिए बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के महिला कॉलेज एवं कलकत्ता के आशुतोष कॉलेज में हुई। कॉलेज में ही वह महिला सशक्तिकरण के लिए सक्रिय रही और छात्राओं के लिए महात्मा गांधी से मिलने के लिए एक यात्रा का भी आयोजन किया। वीना मजूमदार उन महिलाओं की आखिरी पीढ़ी थीं जिन्होंने भारत को एक आजाद देश में परिणत होते देखा। इन्होंने अपनी पुस्तक मेमोरीज ऑफ ए रोलिंग स्टोन में खुद को नारीवादी, संकटमोचक और भारतीय महिला आंदोलन की रिकॉर्डर और इतिहासकार के रूप में पेश किया। इन्होंने महिलाओं को शिक्षित करने एवं सशक्त बनाने की दिशा में कदम उठाया। युवा क्रांतिकारी के रूप में बीना दास ने ब्रिटिश सरकार की चूलें हिला दी। उन्होंने बंगाल के ब्रिटिश गवर्नर स्टेनली जैक्सन को गोली मारने का भी प्रयास किया पर वो चूक गई थीं। उन्हें इसके लिए जेल भेजा गया पर जेल से छूटने के बाद वह पुनः स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गई। 1960 में इन्हें पद्म श्री से विभूषित किया गया, 26 दिसम्बर 1986 को उनकी मृत्यु हो गई।

इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिला आंदोलन का इतिहास काफी दिलचस्प है। महिला आंदोलनों में बंगाल की महिला आंदोलन की भूमिका को विस्मृत नहीं किया जा सकता है। 19 वीं शताब्दी के शुरू में हुआ यह आंदोलन 20 वीं सदी तक अपने चरम पर पहुंच चुका था। जहां 19 वीं सदी में सामाजिक सुधार और सामाजिक-सांस्कृतिक बंधनों से महिलाओं की मुक्ति पर ध्यान केंद्रित किया गया वहीं आने वाले समय में महिलाओं की भूमिका हर क्षेत्र में बढ़ने लगी।

लेखक का योगदान

डॉ. रानी कुमारी – शोधपत्र का शीर्षक, शोध संरचना, आलेख लेखन

वित्तपोषण के स्रोत

इस शोध के लिए किसी भी संस्था या संगठन से किसी प्रकार का वित्तपोषण प्राप्त नहीं हुआ।

आभार

लेखक, प्राचार्य, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नरसिंहपुर, म.प्र. को उनके कृपापूर्ण अनुमोदन एवं सहयोग के लिए हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हैं।

हितों के टकराव का वक्तव्य

लेखक यह घोषित करते हैं कि इस शोध-पत्र के प्रकाशन के संबंध में उनका किसी भी प्रकार का हितों का टकराव नहीं है।

संदर्भ

1. दत्ता, शर्मिष्ठा (2013). क्रांति के समय में मृत्यू और इच्छा, आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक. 59-68, आईएसएसएन 0012-9976
2. Dasgupta, K. (2017, November 8). Banglapedia. Retrieved from https://en.banglapedia.org

3. Bethune College. (2008, September 18). Distinguished Alumnae [Archived]. Wayback Machine. Retrieved from https://www.bethunecollege.ac.in
4. Morgan, R. (1996). Sisterhood in global: The international women's movement anthology. Feminist Press at CUNY. ISBN 978-1-55861-160-3.
5. Kumar, R. (1997). The history of doing: An illustrated account of movements for women's rights and feminism in India. Zubaan / Kali for Women.